हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 16- 22 August 2026

दृष्टि और संवेदना की कला

पितांबरी®
हेल्थकेअर डिवीजन
गोमूत्र प्लस कॅप्सूल्स
गोमाता का स्वास्थ्यवर्धक वरदान!
Gomutra Plus Powder Capsules
Regd. Office: Pitambari Products Pvt. Ltd.: 3rd floor, Hemendra CHS., Gokhale Road, Thane - 400 602, Maharashtra, India.
Mfg. by: Pitambari Products Pvt. Ltd.: 174, GIDC Waghodia, Vadodara - 391 760, Gujarat, India.
For Feedback / Query Contact Consumer Care Executive: 1800 103 1299 (Toll Free) or write us on 'Regd. Office' address.
E-mail: healthcare@pitambari.com
Website: www.pitambari.com
Batch No.:
Mfg. Date:
Exp. Date:
MRP: ₹ (incl. of all taxes)
U. S. P.: ₹
Net Qty.: 10X10 Capsules
Mfg. Lic. No.: GA / 1740
Product of India
पितांबरी
हेल्थकेअर डिवीजन
आयुर्वेद में पहली बार
भारतीय गाय का
गोमूत्र प्लस पाउडर कॅप्सूल्स
त्रिफला युक्त
१०×१० कॅप्सूल्स । जी.एम.पी. प्रमाणित
गोमूत्र प्लस के लाभ
गोमूत्र + त्रिफला (आंवला + बहेड़ा + हरीतकी) = गोमूत्र प्लस कॅप्सूल
•कब्ज, हृदयरोग, मधुमेह जैसी बीमारियों में लाभदायक
•शरीर डिटॉक्स करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है, वजन को नियंत्रित रखता है
•कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में फायदेमंद
•अनचाही गंध और स्वाद नही
भारतीय गोमूत्र को अमेरिका में भी मिला पेटंट।
फ्री सैम्पल
FREE SAMPLE
कोड स्कॅन करें
४ कॅप्सूल्स का फ्री सैम्पल पाए
डॉ. रविंद्र प्रभुदेसाई जी के स्वानुभव पर आधारित इंटरव्यू के लिए कोड स्कॅन करें
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Contact: 9028181859 / 9403130410, CRM: 022-6703 5564 / 5699,
Toll Free: 18001031299 | Shop Online: www.pitambari.com/shop | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

◆ बढ़ते फॉलोवर्स, घटती संवेदना	डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'	04
◆ स्मृतियों की यात्रा	डॉ. विनोद चोपड़ा	06
◆ हर फोटो कुछ कहता है...	विष्णु शर्मा	09
◆ फोटोग्राफी में भी रोचक करियर	डॉ. विनीत उत्पल	11
◆ आर-पार पर उतरे छात्र	रामेंद्र सिन्हा	13
◆ सावन में त्योहारों की भी झड़ी	पूनम नेगी	15
◆ प्रकृति का मल्हार और सावन का आगमन	सोनम लववंशी	18
◆ हवाई परिवहन का बदलता भविष्य	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	20
◆ पनीर की थाली पर सरकार की टेढ़ी दृष्टि	डॉ. ईलेवान ठाकर	22
◆ योजनाओं के साएं में सुरक्षित बुढ़ापा	रचना प्रियदर्शनी	25
◆ अजब-गजब	संकलन	27
◆ इधर भी देखें	संकलन	28
◆ समाचार	-	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

मानवता

डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

फोटोग्राफी एक कला है, लेकिन अगर कोई विपत्ति में हो तो उसकी सहायता करने की बजाय यदि अपने फॉलोवर्स, लाइक व कमेंट के लिए उसके वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डालते हों तो यह कला नहीं, संवेदनहीनता है।

बढ़ते फॉलोवर्स, घटती संवेदना

कहते हैं एक चित्र हजार शब्दों से अधिक प्रभाव पैदा कर सकता है, क्योंकि उसमें शब्दों के बिना भी बहुत कुछ कहने की क्षमता होती है। चित्र जो कभी एक कलाकार की कृति हुआ करता था, सम्भवत: इसी से चित्रकारी या फोटो को कला का नाम दिया गया, लेकिन कला तब तक ही सुंदर है, जब तक उसमें मानवता जीवित है। कैमरे और प्रकाश की सहायता से किसी ऐसे पल को स्थायी रूप देना नि:संदेह कला है, लेकिन वास्तव में फोटोग्राफी इससे कहीं अधिक है। किसी किसान के चेहरे पर पड़ी झुर्रियों को कैमरा कैद कर सकता है, लेकिन उन झुर्रियों में छिपे वर्षों के संघर्ष को अनुभव करने के लिए संवेदनशील दृष्टि का होना आवश्यक है। उसी तरह किसी मां की आंखों में प्रतीक्षा की फोटो को कैद किया जा सकता है, लेकिन उस प्रतीक्षा की पीड़ा समझने के लिए हृदय चाहिए। आज हमारे आसपास कैमरे बहुत हैं, लेकिन देखने वाली आंखें, समझने वाले हृदय कम होते जा रहे हैं।

हर हाथ में मोबाइल ने अपनी जगह बनाई। मोबाइल के कैमरे ने फोटोग्राफी को बेहद आसान और सुलभ बना दिया, घर की बगिया में कोई सुंदर फूल खिला, क्लिक। रिमझिम बारिश हुई, क्लिक। मोहल्ले में भीड़ लगी, क्लिक। सड़क पर दुर्घटना हुई, क्लिक। ट्रेन में फसाद हुआ, क्लिक। कोई नदी में डूब रहा है, दुर्घटना में घायल सड़क पर पड़ा है, किसी का जीवन संकट में है, वह सहायता के लिए गिड़गिड़ा रहा है, लेकिन लोग उसके अंतिम क्षणों को रिकॉर्ड करने में व्यस्त हैं। क्यों यह बात हमें झकझोरती नहीं? सोचिए सामने घटना घटी है, आपके हाथ में मोबाइल है और पास दो विकल्प हैं- पहला, उसकी फोटो लें। दूसरा, मोबाइल जेब में रखें और उसकी सहायता के लिए हाथ बढ़ाएं। सम्भव है पहले विकल्प से शायद आपके फोल-ोअर बढ़ जाएं। दूसरे विकल्प से कोई टिप्पणी या कोई प्रशंसा न मिले, लेकिन उस व्यक्ति की सहायता के लिए बढ़ा आपका हाथ आपके और उस व्यक्ति के लिए जीवन भर सुखद स्मृति बन सकता है। चिंता का विषय है कि आज जन मानस को यह प्रश्न उद्वेलित नहीं करता कि मुझे इस व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए? बल्कि उसकी सोच में रहता है कि इस घटना का वीडियो कैसे बनाऊं और जल्द सोशल मीडिया पर डालूं... अधिक से अधिक लाइक पाऊं?

माना सोशल मीडिया ने हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है, लेकिन उसके साथ एक जिम्मेदारी भी दी है। हमें तय करना है फोटो लेने के पीछे हमारा उद्देश्य क्या हो? फोटो, जो समाज को जगा सके, प्रशासन की आंखें खोल सके, पर्यावरण विनाश के प्रति सचेत करे, अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रमाण बने। विश्व फोटोग्राफी दिवस पर कैमरे के साथ अपने भीतर भी झांकें, समझें कि फोटो हमारी स्मृतियों को जीवित रखती हैं, लेकिन संवेदना हमारे भीतर के मनुष्य को जीवित रखती है। अगर आपका उद्देश्य महज लाइक और फोलोअर बढ़ाना है तो यह

कला नहीं है।

पिछले दिनों सोशल मीडिया पर एक घटना चर्चा में रही, ट्रेन में एक किन्नर ने एक व्यक्ति के हाथ से जबरन 500 का नोट लेकर चलती बनी, जबकि वह 20 का नोट दे रहा था। उसके विरोध करने पर किन्नर ने उस व्यक्ति की पिटाई शुरू कर दी। उस व्यक्ति की पत्नी और बेटी साथ थे। वे लोगों से गुहार लगा रही थी सहायता की। यात्री इस होड़ में थे कि जल्द से जल्द इस घटना को कैमरे में कैद कर सोशल मीडिया पर डाल दिया जाए ताकि फॉलोवर्स बढ़ें, लाइक मिले आदि। क्या ट्रेन के कूपे में बैठे सभी लोग मिलकर उस किन्नर का विरोध करते तो क्या उसकी इतनी हिम्मत थी कि गलत होते हुए किसी व्यक्ति को पीट पाती? ऐसे ही चित्रकूट की उस बालिका के साथ सामूहिक बलात्कार का वीडियो सोशल मीडिया में खूब लाइक किया गया, मगर किसी ने यह जानने का प्रयास नहीं किया कि वीडियो बनाने वाले ने उसे क्यों नहीं बचाया?... क्या उस बच्ची की अस्मिता से आवश्यक था तुम्हारा वायरल होना? इसी तरह बारिश के मौसम में नदी, तालाब या किसी जलाशय में डूबते लोग। कई घटनाएं सोशल मीडिया पर देखी कि तालाब में उस व्यक्ति के हाथ बार-बार ऊपर उठ रहे थे। शायद किसी की ऊंगलियों के सहारे उसे जीवन मिल जाए! किनारे खड़े लोगों की आंखों के सामने एक मनुष्य धीरे-धीरे पानी में समा रहा था। उनके पास वीडियो बनाने का समय तो था, किंतु उसकी सहायता के लिए हाथ बढ़ाने का समय किसी के पास नहीं। वह व्यक्ति पानी में समां गया। फिर उस व्यक्ति के डूब जाने पर बड़े गर्व से कहते हैं- अरे, हमने तो आंख से देखा, हमारे पास घटना का पूरा वीडियो है। एक संवेदनशील फोटोग्राफर की पहचान है। वह किसी की विवशता को तमाशा नहीं बनाता।

स्मरण रखिए, एक सुंदर फूल की फोटो लेना कला है। डूबते सूरज को कैमरे में कैद करना कला है। किसी पक्षी की उड़ान को रोककर रखना कला है। किसी मां के चेहरे पर अपने बच्चे के लिए उमड़ते वात्सल्य को चित्र में उतारना भी कला है, लेकिन किसी की विपत्ति को केवल मनोरंजन या लोकप्रियता के लिए कैमरे में कैद करना कला नहीं, संवेदनहीनता है। इस फोटोग्राफी दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि जब हमारे सामने कोई सुंदर दृश्य होगा, तो हम उसे कैमरे में कैद करेंगे। जब कोई महत्वपूर्ण घटना होगी, तो उसे जिम्मेदारी से दर्ज करेंगे, लेकिन जब हमारे सामने कोई मनुष्य संकट में होगा, तो हम कैमरा उठाने से पहले अपना हाथ उसकी सहायता के लिए बढ़ाएंगे।

●●●

अतीत

स्मृतियों की यात्रा

डॉ. विनोद चोपड़ा

समय बदल गया है, तकनीक बदल गई है, फोटो लेने का तरीका बदल गया है, लेकिन मनुष्य की एक इच्छा आज भी वही है- बीते हुए सुंदर क्षण को किसी तरह अपने पास रोक लेना।

एक समय था जब फोटो खिंचवाना अपने आप में एक घटना हुआ करती थी। आज की तरह हर हाथ में कैमरा नहीं था, न मोबाइल था, न सेल्फी का चलन, न हर छोटी-बड़ी गतिविधि को कैमरे में कैद करने की बेचैनी। फोटो खिंचवाने के लिए किसी विशेष अवसर की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी और जब वह अवसर आता था तो मन में एक अलग ही उत्साह उमड़ता था।

पुराने दिनों में कैमरा हर घर की वस्तु नहीं था। विरले ही ऐसे परिवार होते थे जिनके पास कैमरे होते थे। किसी के घर कैमरा होना भी एक तरह की विशेष बात मानी जाती थी। प्रायः किसी शादी-ब्याह, पारिवारिक समारोह, मेले, यात्रा या किसी महत्वपूर्ण अवसर पर फोटोग्राफर को बुलाया जाता था। मेलों में अलग से कहीं एक फोटोग्राफर का स्टॉल लगा होता था। स्टूडिओ के अंदर हरे-भरे प्राकृतिक दृश्य होते, तो कहीं बनावटी कार रखी होती, तो कहीं किसी डाकू का परिधान रखा होता। लोग अपनी पसंद का फोटो खिंचवाते। लोग अपने अच्छे कपड़े पहनते, बाल संवारते और फिर कैमरे के सामने बड़ी सावधानी से बैठते या खड़े होते। किसी के हाथ में फोटोग्राफर फूलदान थमा देता। चेहरे पर मुस्कान भी जैसे सोच-समझकर लाई जाती थी, क्योंकि पता होता था कि यह फोटो बार-बार खींचने का अवसर नहीं है। फिर आरम्भ हो जाती फोटो मिलने की प्रतीक्षा कि कब स्टूडिओ जाएं और अपना फोटो देखें। जब आखिरकार फोटो हाथ में आतीं तो उन्हें देखना भी एक छोटा-सा उत्सव होता था। परिवार के सदस्य एक-दूसरे के हाथ से फोटो लेकर देखते। कोई कहता- इसमें तो मैं ठीक नहीं लग रहा, कोई किसी की मुस्कान पर टिप्पणी करता और कोई उस फोटो को देखकर पुराने प्रसंग को याद करने लगता। एक फोटो के पीछे पूरा एक किस्सा छिपा होता था। यही नहीं विद्यालयों में जो अंतिम कक्षा होती उसके सभी छात्रों में कोतहूल होता फोटो लेने का, जिसे वो रख सकते संजो कर यादगार के क्षणों के रूप में। पूरी आयु उस फोटो को देख कर अपने स्कूल के दिनों कों याद करते।

पुराने फोटो एलबम इसलिए केवल फोटो का संग्रह नहीं थे, वे परिवार की स्मृतियों के कागजात होते थे। मोटे कागजों के बीच सुरक्षित फोटो को बड़े जतन से रखा जाता था। कभी-कभी वर्षों बाद एलबम निकलता और उसके पन्ने पलटते-पलटते समय जैसे

पीछे लौट जाता। किसी फोटो में बचपन मुस्करा रहा होता, किसी में माता-पिता युवा दिखाई देते, किसी में वे लोग होते जो आज हमारे बीच नहीं हैं। वे थे तो कागज के टुकड़े, लेकिन उनका भाव अधिक गहरा था।

आज स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। अब कैमरा हमारे हाथ में नहीं, बल्कि लगभग हमारे हाथ का ही हिस्सा बन चुका है। मोबाइल फोन ने फोटोग्राफी को इतना सहज बना दिया है कि किसी भी क्षण फोटो खींची जा सकती है। एक दृश्य पसंद आया- फोटो। मित्र मिले-सेल्फी। खाना आया- फोटो। यात्रा शुरू हुई- फोटो। यात्रा समाप्त हुई- फोटो। यहां तक कि कई बार हम किसी सुंदर दृश्य को देखने से पहले उसे कैमरे में कैद करने की चिंता करने लगते हैं। आज एक क्षण में 10 फोटो खींची जा सकती हैं और कुछ ही सेकंड में उन्हें दुनिया के सामने साझा भी किया जा सकता है। फोटो लेने और देखने के बीच अब कोई प्रतीक्षा नहीं है, लेकिन शायद इसी सुविधा ने फोटो की विशेषता भी कुछ कम कर दी है। पहले एक फोटो के लिए लोग तैयार होते थे, आज फोटो के लिए जीवन के क्षणों को बार-बार दोहराया जाता है। पहले फोटो किसी विशेष घटना की स्मृति होती थी, आज फोटो घटनाओं की संख्या से कहीं अधिक हो गई हैं। हमारे फोन में हजारों फोटो जमा हैं, लेकिन उनमें से कितनी फोटो ऐसी हैं जिन्हें हम वर्षों बाद भी उसी भाव से देखेंगे? पहले एक फोटो सम्भालकर रखी जाती थी, आज हजारों फोटो डिजिटल भीड़ में कहीं खो जाती हैं। यह बदलाव केवल तकनीक का बदलाव नहीं है। यह हमारी भावनाओं और स्मृतियों के बदलते स्वरूप का भी संकेत है। पहले फोटो हमें किसी बीते हुए क्षण तक वापस ले जाती थी। आज हम क्षण को जीने के साथ-साथ उसे रिकॉर्ड करने में भी व्यस्त रहते हैं।

फिर भी मोबाइल कैमरे को केवल दोष देना उचित नहीं होगा। इसने फोटोग्राफी को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब किसी विशेष अवसर की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। बच्चों के बचपन से लेकर माता-पिता की मुस्कान तक, यात्रा के दृश्य से लेकर रोजमर्रा की छोटी-छोटी खुशियों तक-हर चीज को सुरक्षित रखा जा सकता है। आज हमारे पास अपने जीवन का ऐसा दृश्य-संग्रह है जिसकी कल्पना पिछली पीढ़ियां नहीं कर सकती थीं। समस्या कैमरे में नहीं, शायद हमारी दृष्टि में है।

हमें फिर से यह सीखने की आवश्यकता है कि हर क्षण को कैमरे में कैद करना आवश्यक नहीं। कुछ क्षण ऐसे भी होने चाहिए जिन्हें हम केवल अपनी आंखों से देखें, मन में उतारें और स्मृति में सुरक्षित रखें।

●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

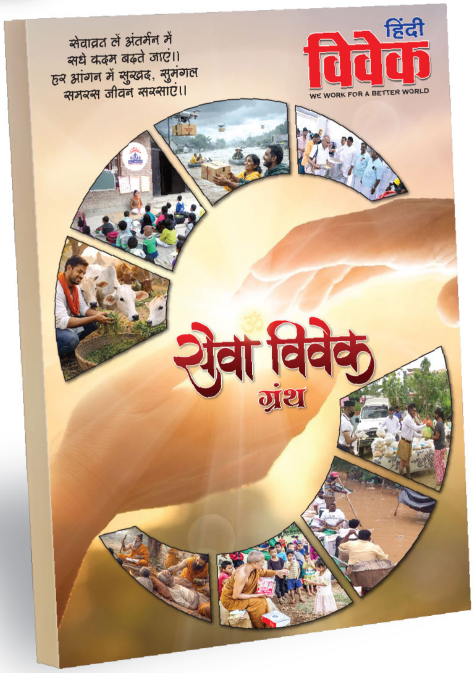

प्रकाशन पूर्व मूल्य
₹ 600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

विष्णु शर्मा

विश्व फोटोग्राफी दिवस- 19 अगस्त

महंगे उपकरण, उच्च दक्षता वाले मोबाइल फोन के कैमरे आने के बाद भी फोटोग्राफी के लिए ये सारे महंगे उपकरण नहीं बल्कि दृष्टि होनी चाहिए क्योंकि यह फोटो ही इतिहास बनाता है।

हर फोटो कुछ कहता है...

फोटोग्राफी इकलौती ऐसी भाषा है, जिसे लोग दुनिया भर में समझते हैं, तभी तो दुनियां भर के बच्चों को शुरूआती दिनों में भी शब्दों के साथ-साथ चित्रों से समझाया जाता है। एक पुरानी कहावत है 'जिंदगी एक कैमरे के जैसी है, जो जरूरी बातें हैं उन पर 'फोकस' करो, अच्छे लम्हों को 'कैप्चर' कर लो, 'नेगेटिव्स' से 'डेवलप' करो और अगर सब कुछ मन-मुताबिक नहीं होता तो फिर से एक नया 'शॉट'लो।'

एक फोटो के साथ सबसे विशेष बात ये है कि ये कभी नहीं बदलता, तब भी नहीं जब इसमें मौजूद लोग बदल जाते हैं। डेस्टिन स्पार्क्स ने कहा था, 'फोटोग्राफी एक ऐसी कहानी है, जिसे मैं शब्दों में लिखने में असफल रहा।' यूं भी कहा जाता है कि एक फोटो एक हजार शब्दों के बराबर होती है। शब्द फोटो की जगह नहीं ले पाते, लेकिन केवल एक फोटो हजार शब्दों की कमी दूर कर देता है। इस बात को भारत की पहली महिला फोटो पत्रकार होमी व्यारावाला से बेहतर भला कौन समझ सकता था। आज गांधीजी की हत्या के दौरान का कोई फोटो उपलब्ध नहीं है, तो उसके पीछे एक कहानी है।

उस दिन गांधीजी की प्रार्थना-सभा को कवर करने के लिए होमी साइकिल से बिरला हाउस जा रही थीं, लेकिन उनके फोटोग्राफर पति ने उनको वापस किसी काम से कार्यालय बुला लिया और गांधी हत्या के समय कोई भी प्रेस फोटोग्राफर वहां मौजूद नहीं था। वरना स्वतंत्रता, विभाजन के समय के हम जितने

चर्चित फोटो देखते हैं, उनमें से ज्यादातर होमी के हैं। उनमें से कई आज नई पीढ़ी के लिए सोशल मीडिया सनसनी बन गए हैं, जैसे नेहरूजी का एक ब्रिटिश राजनयिक की पत्नी की सिगरेट सुलगाने का फोटो, बहन विजयलक्ष्मी पंडित को गले लगाने का फोटो आदि। नेहरू के साथ एक फोटो संथाल जाति की आदिवासी महिला बुधनी के लिए नर्क बन गया, नेहरूजी ने उससे एक डैम का उद्घाटन करवा दिया और गले में माला डाल दी, घर पहुंची तो आदिवासियों ने कहा तुम्हारी तो शादी हो गई और गांव से निकाल दिया, लेकिन फोटो समय को बांध देता है और वो समय एक अमिट इतिहास बन जाता है। कुछ फोटो भारत के इतिहास की ऐसी हैं, जिनको अगर हटा दें, तो इतिहास अधूरा ही रह जाएगा। जैसे चंद्रशेखर आजाद का जनेऊ पहने मूंछों पर ताव देता फोटो, ये ना होता तो उनका कोई दूसरा फोटो मिलता ही नहीं। भगत सिंह का बिना दाढ़ी के हैट में फोटो, जो उन्होंने असेम्बली में बम फेंकने से पहले एक स्टूडियो में खिंचवाया था ताकि फांसी के बाद नवबांकुरे इस बात से प्रेरणा ले सकें कि देश के लिए फांसी पर चढ़ने वाले कितने सुंदर थे।

लोकमान्य तिलक का अंतिम फोटो, जिसमें पद्मासन मुद्रा में उनका अंतिम संस्कार किया गया था। गांधीजी का चार्ली चैप्लिन और नेहरू के आइंस्टीन के साथ फोटो, ऐसे फोटो नहीं होते, तो शायद आज लोग आसानी से विश्वास नहीं करते। इसी तरह गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला में कांग्रेस के पहले अधिवेशन में पहले 72 संस्थापकों का फोटो हो या काकोरी ट्रेन डकैती में गिरफ्तार क्रांतिकारियों का समूह फोटो, आज हमारी धरोहर ही हैं।

आज सोशल मीडिया पर फोटोज कभी कभी राजनैतिक दांव-पेंच में भी काम आते हैं, जैसे ही ईवीएम आदि को लेकर कांग्रेस ने सवाल उठाए तो भाजपा वाले राजेश खन्ना का फोटो ले आए, जिसमें एक मतपेटिका में सोनिया गांधी को वोट डालने में काका और राजीव गांधी दोनों सहायता कर रहे हैं। इसी तरह जब बीजेपी वाले मोदी को योग दिवस का श्रेय देते हैं, तो कांग्रेसी नेहरूजी के शीर्षासन का फोटो शेयर कर पूछते हैं, उनसे ऐसे करवाके दिखाओ।

कुछ फोटो तो इतने अहम हैं कि एक फोटो से ही सारा इतिहास समझ आता है, जैसे सरदार पटेल के आगे हैदराबाद एयरपोर्ट पर निजाम का हाथ जोड़कर झुकते का फोटो, ओशो रजनीश का हाथ फैलाए आंखें बंद किए विनोद खन्ना के माथे पर हाथ रखने का फोटो, मुंबई में सावरकर संग बैठे नेताजी बोस का फोटो, देवानंद का नई राजनीतिक पार्टी के ऐलान करते वक्त का फोटो, विश्व धर्म समागम में स्वामी विवेकानंद जी का फोटो, अटलजी का संसद में बैलगाड़ी में बैठकर प्रवेश करने का फोटो और 1964 में जॉर्ज हैरीसन की ताजमहल के साथ पहली सेल्फी आदि।

अभी भी फोटोग्राफ वही अहम माना जा रहा है, जो कुछ कहता हो। यानी उसमें कोई कहानी छुपी हो या फिर जो दुर्लभ हो या किसी ऐसी सोच या एंगल के साथ लिया गया हो कि लोग उसकी चर्चा करें। जैसे हालिया छात्र प्रदर्शन में पुलिस वैन को रोकने का मुंबई की रिया अहीर का फोटो चर्चा में आ गया। हो सकता है ये फोटो योजनाबद्ध तरीके से प्रसिद्ध होने के लिए लिया गया हो, लेकिन पहलगाम में कानपुर के एक पर्यटक की लाश के साथ बैठी उसकी पत्नी के फोटो ने तो पिछली साल इंटरनेट पर सारे रिकॉर्ड ही तोड़ दिए थे। पिछले साल ही महिला क्रिकेट टीम का वर्ल्ड कप जीतने के बाद तिरंगे के साथ उत्सव का फोटो भी काफी वायरल हुआ था। मोदी सरकार की शपथ के बाद एक लाइन में मोदी, अमित शाह और राजनाथ के चेहरों का साइड प्रोफाइल फोटो आज भी बेहतरीन माना जाता है।

सो अवसर क्या है, फोटो किस सोच के लिए साथ लिया गया, फोटो के जरिए फोटोग्राफर क्या बताना चाहता है, क्या वो कोई ऐतिहासिक घटना होने जा रही है, काफी कुछ इन कारकों पर निर्भर करता है। ऐसे में कितने भी महंगे कैमरे या मोबाइल फोन आ जाएंगे, लेकिन फोटोग्राफर की सोच और मेहनत उन सब पर भारी पड़ती है। कैसे होमी मर्द फोटोग्राफर्स के पैरों के बीच से फोटो खींचती थीं, कैसे वो जिन्ना का फोटो लेने के लिए कुछ बॉक्सेज के ऊपर चढ़ गई थीं और फिर धड़ाम से जिन्ना के पैरों के पास गिरी थीं, ये पल उनके लिए आसान नहीं थे, लेकिन उन्हीं होमी ने 1970 में अपना ये करियर इसलिए छोड़ दिया क्योंकि नए पेपराजी फोटोग्राफर मेहनत करने के बजाय मारामारी में जुट गए थे। ऐसे में फोटोग्राफी को गम्भीरता से लेने वालों के लिए होमी, रघु राय जैसे दिग्गज फोटोग्राफर्स के संघर्ष को जरूर पढ़ना चाहिए। उनके फोटोज का अध्ययन करना चाहिए कि एक आसान से पल को कैसे उन्होंने यादगार बना दिया और इसके लिए एक अलग दृष्टि चाहिए होती है। ●●●

शिक्षा

यदि आपमें सौंदर्य की परख है, चीजों को अलग दृष्टि से देखने की क्षमता है और कैमरे के लेंस से प्रेम है, तो फोटोग्राफी आपके लिए केवल पसंद नहीं, बल्कि करियर का रास्ता भी बन सकती है।

डॉ. विनीत उत्पल

फोटोग्राफी में भी रोचक करियर

फोटोग्राफी कला के साथ-साथ संचार, पत्रकारिता, विज्ञापन, फैशन, पर्यटन, वन्यजीव संरक्षण, ई-कॉमर्स, फिल्म, सोशल मीडिया और डिजिटल मीडिया का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है।

वर्तमान में हर हाथ में मोबाइल है और इसके कैमरे ने फोटोग्राफी को लगभग हर व्यक्ति की पहुंच में ला दिया है। मोबाइल के जरिए रील बन रहे हैं, वीडियो बन रहे हैं, लेकिन मोबाइल से फोटो खींच लेना और पेशेवर फोटोग्राफर बनना दो अलग बातें हैं। पेशेवर फोटोग्राफी में तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ प्रकाश, रंग, संरचना, फ्रेम, विषय-वस्तु और कहानी कहने की समझ आवश्यक होती है।

रूचि से करियर तक

कैमरा केवल एक उपकरण है। कैमरा चलाना सीखना फोटोग्राफी की शुरुआत है, मंजिल नहीं। एक अच्छा फोटोग्राफर प्रकाश को पढ़ता है, क्षण को पहचानता है और विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। फोटो जर्नलिज्म, फैशन फोटोग्राफी, वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी, वेडिंग फोटोग्राफी, ट्रैवल फोटोग्राफी, प्रोडक्ट फोटोग्राफी, विज्ञापन फोटोग्राफी, डॉक्यूमेंट्री फोटोग्राफी, फूड फोटोग्राफी, आर्किटेक्चरल फोटोग्राफी और सोशल मीडिया कंटेंट क्रिएशन जैसे अनेक क्षेत्र युवाओं के लिए खुले हैं।

फोटोग्राफी सीखने के लिए किसी आयु या शैक्षणिक पृष्ठभूमि की अनिवार्यता नहीं होती है। जो लोग इसे हॉबी के रूप में सीखना चाहते हैं, उनके लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन शॉर्ट-टर्म कोर्स उपलब्ध हैं। वहीं, जो विद्यार्थी इसे करियर बनाना चाहते हैं, वे प्रमाणपत्र, डिप्लोमा, स्नातक और परास्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों का चुनाव कर सकते हैं।

कैसे बनें प्रोफेशनल फोटोग्राफर

फोटोग्राफी सीखने के लिए कैमरे को अच्छी तरह समझना आवश्यक है। कैमरे के साथ लेंस, ट्राइपॉड, फ्लैश, रिफ्लेक्टर, लाइटिंग उपकरण, मेमोरी कार्ड और अन्य आवश्यक उपकरणों

का प्रयोग सीखना आवश्यक है, लेकिन शुरुआत में महंगे उपकरण खरीदना आवश्यक नहीं है। उपलब्ध संसाधनों से अधिक से अधिक अभ्यास करना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

फोटोग्राफी के मूल सिद्धांतों में एक्सपोजर, शटर स्पीड, अपर्चर, आईएसओ, फोकस, डेप्थ ऑफ फील्ड, फ्रेमिंग, कंपोजिशन और लाइटिंग की समझ आदि को जानना आवश्यक है। इसके साथ फोटो एडिटिंग और डिजिटल इमेज प्रोसेसिंग का ज्ञान भी आज लगभग अनिवार्य है। फोटोग्राफी में अभ्यास का कोई विकल्प नहीं है। जितना अधिक आप फोटो खींचेंगे, उतना ही बेहतर आपका फ्रेम और दृष्टि विकसित होगा।

अपने मोबाइल या कैमरे से खींची गई तस्वीरों का नियमित रूप से मूल्यांकन करें। खुद से सवाल करें कि फ्रेम बेहतर कैसे हो सकता था? प्रकाश सही था या नहीं? विषय स्पष्ट दिखाई दे रहा है या नहीं? तस्वीर कोई कहानी कह रही है या नहीं?

धीरे-धीरे अपना पोर्टफोलियो भी तैयार करें। वर्तमान समय में डिजिटल पोर्टफोलियो के लिए वेबसाइट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन फोटो प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जाता है। करियर बनाने वाले विद्यार्थियों के लिए मजबूत पोर्टफोलियो कई बार डिग्री से भी अधिक प्रभावी साबित होता है। अच्छे फोटोग्राफर बनने के लिए किसी अच्छे संस्थान से प्रशिक्षण लेना चाहिए। किसी पेशेवर फोटोग्राफरों के साथ इंटर्नशिप या असिस्टेंट के रूप में काम कर सकते हैं। इससे वास्तविक परिस्थितियों में काम करने का अनुभव मिलता है।

कहां से सीखें फोटोग्राफी

देश में फोटोग्राफी सीखने के लिए कई प्रतिष्ठित संस्थान और विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम या प्रशिक्षण उपलब्ध हैं। पाठ्यक्रम, प्रवेश प्रक्रिया, फीस और पात्रता समय-समय पर बदल सकती है, इसलिए आवेदन से पहले संस्थान की आधिकारिक वेबसाइट अवश्य देखनी चाहिए।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, गांधीनगर/अहमदाबाद: यहां फोटोग्राफी डिजाइन में मास्टर कोर्स है। कार्यक्रम गांधीनगर कैम्पस में संचालित होता है। इसमें फोटोग्राफी को तकनीक, दृश्य संस्कृति, शोध और समकालीन पेशेवर अभ्यास के संदर्भ में पढ़ाया जाता है।

एजे किदवई मास कम्युनिकेशन रिसर्च सेंटर, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली: यहां पीजी डिप्लोमा इन स्टिल फोटोग्राफी एंड विसुअल कम्युनिकेशन का दो सेमेस्टर का पूर्णकालिक कार्यक्रम है। इसमें फोटो जर्नलिज्म, विज्ञापन, डॉक्यूमेंट्री, लाइफस्टाइल और अन्य क्षेत्रों की जानकारी दी जाती है।

डिपार्टमेंट ऑफ एप्लाइड आर्ट, जामिया मिल्लिया इस्लामिया: यहां सर्टिफिकेट इन क्रिएटिव फोटोग्राफी का एक वर्षीय कार्यक्रम भी उपलब्ध है।

श्री अरबिंदो सेंटर फॉर आर्ट्स एंड कम्युनिकेशन (एसएसीएसी), नई दिल्ली: यह संस्थान डिप्लोमा इन प्रोफेशनल फोटोग्राफी का कोर्स संचालित करता है। यह कोर्स फोटोग्राफी को दृश्य भाषा, सौंदर्यबोध, तकनीक और व्यावसायिक अभ्यास के साथ जोड़ता है।

लाइट एंड लाइफ अकादमी, ऊटी: यहां प्रोफेशनल फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी में डिप्लोमा के साथ-साथ ट्रेवल एंड नेचर फोटोग्राफी एंड वीडियोग्राफी में भी कोर्स कराया जाता है।

फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे: यहां फिल्म और सिनेमैटोग्राफी शिक्षा के साथ-साथ समय-समय पर स्टिल फोटोग्राफी से सम्बंधित शॉर्ट-टर्म प्रशिक्षण भी आयोजित करता है।

कमाई की कितनी संभावना?

फोटोग्राफी में कमाई का कोई एक निश्चित पैमाना नहीं है। शुरुआत में फ्रीलांस फोटोग्राफर छोटे प्रोजेक्ट, इवेंट, पोर्ट्रेट, सोशल मीडिया कंटेंट, स्थानीय प्रकाशनों या एजेंसियों के साथ काम कर सकते हैं। अनुभव बढ़ने के साथ आय भी बढ़ती है। कई फोटोग्राफर स्वतंत्र रूप से काम करते हैं और समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापन एजेंसियों, मीडिया संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों, ई-कॉमर्स कम्पनियों तथा कॉरपोरेट संस्थानों के लिए काम करते हैं। कुछ लोग अपनी फोटो प्रदर्शनी लगाते हैं, फोटोबुक प्रकाशित करते हैं या तस्वीरों को स्टॉक फोटो प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराते हैं।

वर्तमान में फोटोग्राफर केवल तस्वीर नहीं खींचता। उसे फोटो एडिटिंग, सोशल मीडिया, वीडियो, डिजिटल स्टोरीटेलिंग, ड्रोन इमेजिंग, मोबाइल फोटोग्राफी और बदलती डिजिटल तकनीकों की जानकारी भी रखनी पड़ती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और कम्प्यूटेशनल फोटोग्राफी के दौर में तस्वीर बनाने और संपादित करने के तरीके तेजी से बदल रहे हैं।

रांची में जेपीएससी और जेएसएससी परीक्षाओं में कथित धांधली के खिलाफ छात्र आर-पार पर उतर आए हैं। छात्र सीबीआई जांच की आधिकारिक घोषणा तक आंदोलन और भूख हड़ताल वापस नहीं लेंगे।

रामेंद्र सिन्हा

आर-पार पर उतरे छात्र

रांची के महत्वपूर्ण प्रशासनिक क्षेत्रों जैसे झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी), झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) मुख्यालय तथा मुख्य मंत्री आवास के निकट भारी पुलिस बल तैनात है और निषेधाज्ञा लागू है। यह पंक्तियां लिखे जाने तक झारखंड छात्र आंदोलन की स्थिति बेहद संवेदनशील बनी हुई है। पुलिसिया दमन के बावजूद छात्र रांची के जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम और मोरहाबादी मैदान के आसपास शांतिपूर्ण ढंग से डटे हुए हैं। छात्र संगठन अड़े हैं कि परीक्षाओं में कथित धांधली की सीधे सीबीआई जांच की आधिकारिक घोषणा होने तक आंदोलन और भूख हड़ताल वापस नहीं लिया जाएगा। प्रबल सम्भावना है कि 14 अगस्त को झारखंड उच्च न्यायालय सीबीआई जांच के आदेश दे दे। अन्यथा, छात्र पूरे राज्य में 'भ्रष्टाचार से मुक्ति' के नारे के साथ 15 अगस्त की शाम महा-मशाल जुलूस निकालने की तैयारी में हैं।

आंदोलन की चिंगारी तब भड़की, जब 23 जुलाई को 14वीं जेपीएससी परीक्षा और जेएसएससी-सीजीएल परीक्षाओं में धांधली के विरूद्ध स्वतंत्र सीबीआई जांच और भर्ती प्रणाली में बड़े सुधारों की मांग को लेकर राज्यभर से हजारों अभ्यर्थी एडमिट कार्ड और कॉपियां लेकर रांची के मुंडा स्टेडियम में जुटने शुरू हुए। छात्र स्वतंत्र सीबीआई जांच और पूरे भर्ती सिस्टम में बड़े सुधारों की मांग कर रहे थे। इसी दौरान, छात्र नेता देवेंद्रनाथ महतो 2 अगस्त से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठ गए, और उनकी तबीयत बिगड़ने लगी। दूसरी ओर, राज्य का प्रमुख विपक्षी दल भाजपा 11 अगस्त को प्रदेश बंद आयोजित करके इस आंदोलन में खुल्लमखुल्ला साथ उतर चुका है। यही नहीं, छात्रों के अभिभावकों सहित अनेक कोचिंग संस्थान और कई स्थानीय आदिवासी और मूलवासी संगठन भी छात्रों के समर्थन में आगे आ गए हैं। दूर्भाग्यपूर्ण तो ये है कि नीट को लेकर जंतर मंतर पर हुए प्रदर्शन को जोर शोर से मुद्दा बनाने वाले विपक्ष ने बड़ी चतुराई से झारखंड के इस आंदोलन से पल्ला झाड़ लिया।

भर्ती परीक्षाओं में धांधली को लेकर झारखंड पुलिस की सीआईडी

और प्रवर्तन निदेशालय (इडी) की जांच में इस सिंडिकेट को लेकर कई चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इस घोटाले की कड़ियां मुख्य रूप से परीक्षा कराने वाली नोएडा की ब्लैकलिस्टेड प्राइवेट एजेंसी 'मेसर्स टीएसआर डेटा प्रोसेसिंग प्राइवेट लिमिटेड' (टीडीपीएल) के पूर्व मार्केटिंग मैनेजर अभय तिवारी (जो खुद गोड्डा में ब्लॉक सप्लाई ऑफिसर बन चुका था) की गिरफ्तारी के बाद उजागर हुई हैं। बोले तो, सीआईडी की पूछताछ में खुलासा हुआ कि बोकारो में सितम्बर 2024 में हुई जेएसएससी-सीजीएल परीक्षा से ठीक पहले 15 अभ्यर्थियों को एक जगह इकट्ठा कर 65 प्रश्नों के उत्तर रटवाए गए थे। प्रत्येक उम्मीदवार से 12-12 लाख रुपए वसूले गए थे। मुख्य आरोपी अभय तिवारी का खुद का सीजीएल परीक्षा में 48वां रैंक था। इसके अतिरिक्त उसने अपने भाई (अक्षय तिवारी) और भाभी (सुषमा कुमारी) का भी इसी साठगांठ के जरिए अलग-अलग सरकारी विभागों में चयन करवा दिया। पेपर लीक में प्रश्न पत्र छापने वाली एजेंसी 'वेबेल' के मालिकों और पटना के कुछ बड़े रैकेटियर्स की मिलीभगत की भी चर्चा है। जेपीएससी की 14वीं सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा (पीटी) के परिणाम जारी होते ही धांधली की पोल खुल गई। जेपीएससी परीक्षा का जिम्मा उसी दागी और विवादित प्राइवेट एजेंसी टीडीपीएल को सौंपा गया था। पता चला कि इस एजेंसी को नियमों को ताक पर रखकर भारी रिश्वत के बदले परीक्षा कराने का टेंडर दिया गया था। जेपीएससी ने पीटी रिजल्ट के साथ उम्मीदवारों के कैटेगरी-वाइज कट-ऑफ मार्क्स जारी नहीं किए। इसके अतिरिक्त, जिस मेरिट लिस्ट के आधार पर 2,204 छात्रों का चयन मुख्य परीक्षा के लिए हुआ, उस पर आयोग के संवैधानिक सदस्यों के हस्ताक्षर ही नहीं थे। आरोप है कि सिंडिकेट के अभ्यर्थियों को परीक्षा हॉल में ओएमआर शीट खाली छोड़ने को कहा जाता था, जिसे बाद में एजेंसी के कंप्यूटर ऑपरेटरों की सहायता से बैकडोर से भरा जाता था। भ्रष्टाचार के ठोस साक्ष्य मिलने के बाद सीआईडी ने पूर्व मुख्य सचिव और जेपीएससी के तत्कालीन चेयरमैन एल. खियांग्ते को गिरफ्तार कर लिया है। इसके साथ ही आयोग के तीन संवैधानिक सदस्यों ने भी दबाव में आकर त्यागपत्र दे दिया। करोड़ों रुपए के काले धन के लेन-देन को देखते हुए इडी ने इस मामले में इसीआईआर (इंफोर्समेंट केस इंफॉर्मेशन रिपोर्ट) दर्ज की है।

कथित पेपर लीक और भ्रष्टाचार की जांच सीआईडी जैसी स्थानीय एजेंसियों के बजाय सीधे केंद्रीय सीबीआई से कराने पर अड़े छात्रों की मांग है कि 14वीं जेपीएससी मुख्य परीक्षा और जेएसएससी-सीजीएल परीक्षाओं को पूरी तरह रद्द करके नए सिरे से पारदर्शी तरीके से आयोजित किया जाए। परीक्षाओं के लिए एक स्पष्ट 'परीक्षा कैलेंडर' जारी हो और नियुक्ति प्रक्रियाओं में स्थानीय (झारखंड के) युवाओं को प्राथमिकता देने के लिए स्थानीयता नीति को कड़ाई से लागू किया जाए। प्रश्न पत्र लीक करने वाले गिरोह और इसमें शामिल अधिकारियों के विरूद्ध 'एंटी-पेपर लीक कानून' के तहत कड़ी कार्रवाई की जाए।

दूसरी ओर, आंदोलन के दबाव में झारखंड सरकार ने राज्य की भर्ती प्रणालियों को पूरी तरह बदलने के लिए आईआईटी और आईआईएम के विशेषज्ञों की एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है। समिति के उद्देश्यों में सरकारी परीक्षाओं से निजी एजेंसियों की भूमिका को पूरी तरह समाप्त करना और केंद्रीय एजेंसियों (जैसे टीसीएस या सीडीएसी) को परीक्षा का जिम्मा सौंपने का खाका तैयार करना, ओएमआर शीट की स्कैनिंग और कोडिंग के लिए एक डिजिटल ऑटोमेटेड सिस्टम बनाना, जिसमें मानव हस्तक्षेप शून्य हो, परीक्षा केंद्रों पर जैमर लगाने, प्रश्न पत्रों को जीपीएस-ट्रैक्ड डिजिटल लॉकरों में रखने और पेपर लीक करने वालों को उम्रकैद व 10 करोड़ तक का जुर्माना देने वाले कड़े कानून की सिफारिश करना तथा यूपीएससी की तर्ज पर जेपीएससी और जेएसएससी के लिए एक निश्चित वार्षिक परीक्षा कैलेंडर तैयार करना ताकि तय समय पर भर्तियां पूरी हो सकें, शामिल है। समिति को अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट सरकार को सौंपने की की समयसीमा 24 अगस्त है, जबकि 'फाइनल ब्लूप्रिंट'देने की अंतिम तिथि 7 सितम्बर 2026 है।

झारखंड उच्च न्यायालय ने इस मामले की गम्भीरता को देखते हुए राज्य सरकार और सीआईडी को स्पष्ट निर्देश दिया है कि 14 अगस्त को होने वाली सुनवाई में यह स्पष्ट किया जाए कि अंतर-राज्यीय गिरोहों तक पहुंचने के लिए सीबीआई की सहायता क्यों नहीं ली जानी चाहिए।

●●●

पूनम नेगी

सावन अपने साथ केवल बारिश की फुहारें और हरियाली लेकर ही नहीं आता बल्कि सावन में त्योहारों की भी झड़ी लग जाती है। सावन में कई त्योहार आते हैं, जिनमें नागपंचमी, हरियाली तीज, रक्षाबंधन वैगरह-वैगरह।

सावन में केवल शिवपूजा की नहीं, इन त्योहारों की भी रहती है धूम।

हिंदू तिथि पंचांग के अनुसार वर्ष के पांचवें महीने 'श्रावण' यानी सावन को केवल एक ऋतु काल ही नहीं, बल्कि भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना का महा उत्सव है। ग्रीष्म ऋतु की तपती गर्मी के बाद जब सावन की फुहारें धरती पर गिरती हैं, तो न केवल प्रकृति बल्कि मानव मन भी भक्ति और उत्साह से सराबोर हो उठता है। इस हरी-भरी ऋतु में शिवोपासना तथा पर्यावरण संरक्षण के साथ अनेक लोकपर्वों का भी आयोजन किया जाता है। सावन का महीना केवल भोलेनाथ के जलाभिषेक की कांवर यात्राओं, रुद्राभिषेक और श्रावणी सोमवार के व्रतों के कारण विशिष्ट नहीं है; अपितु इस महीने में सुख सौभाग्य व अनिष्ट निवारण के लिए सुहागन स्त्रियां हर मंगलवार को मंगला गौरी का व्रत भी रखती हैं। यही नहीं, इस ऋतु में हरियाली अमावस्या, हरियाली तीज, नागपंचमी व श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबंधन) के पर्व भी मनाए जाते हैं।

हरियाली तीज की कथा और पर्व के रोचक लोक-रंग

शिव महापुराण की कथा के अनुसार महादेव के परामर्श की अवहेलना कर मां सती पिता दक्ष के देव यज्ञ में शामिल होने गई थीं, किंतु वहां पिता द्वारा महादेव के अपमान से आहत होकर उन्होंने यज्ञकुंड में कूद कर अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। तत्पश्चात वे अगला जन्म लेकर महादेव को पाने की साधना करती रहीं। अंततः 108वें जन्म में पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में उनकी कठोर साधना सार्थक हुई और श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को महादेव व माता पार्वती का पुनर्मिलन हुआ, तभी से भारतीय जन-जीवन में यह तिथि शिवकृपा की प्राप्ति के

सावन में त्योहारों की भी झड़ी

सर्वाधिक फलदायी लोकपर्व के रूप में विख्यात हो गई। हिंदू सुहागिनों की प्रगाढ़ आस्था है कि हरियाली तीज का व्रत करने से सुहाग की आयु लम्बी होती है। इस पर्व में हरे रंग का विशेष महत्व है क्योंकि यह रंग समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक माना जाता है। प्रकृति की हरियाली से तालमेल बिठाते हुए महिलाएं इस दिन हरे रंग के वस्त्र और चूड़ियां पहनती हैं। गांवों से लेकर शहरों तक, बागों में पेड़ों पर झूले डाल दिए जाते हैं। मल्हार और कजरी जैसे पारम्परिक लोकगीत हवाओं में गूंजने लगते हैं। प्रेम और उत्साह के इस महीने में नई-नवेली दुल्हन अपने मायके जाकर झूला झूलती हैं और सखियों से अपने पिया और उनके प्रेम की बातें करती है। हर्ष का विषय है कि आज महानगरीय जीवन में भी भारतीय महिलाएं परम्परा और आधुनिकता का सुंदर संयोजन करते हुए महिला क्लब व सोसायटी में तीज उत्सव का आयोजन करने लगी हैं।

नागपंचमी : हिंदू संस्कृति की अद्भुत परम्परा

हमारी सनातन हिंदू संस्कृति में सावन महीने के शुक्ल की पंचमी तिथि को नाग पूजन की परम्परा पौराणिक युग से चली आ रही है। सृष्टि के कण-कण में परमात्म तत्व का दर्शन कराने वाली हमारी महान ऋषि मनीषा ने हमारे लोकजीवन में नागों की महत्ता की प्रतिष्ठा बेहद गहनता से की है। तमाम पौराणिक उदाहरण इस महत्ता की पुष्टि करते हैं। अमृत्व प्राप्ति की कामना से देव-दानवों के मध्य हुआ समुद्र मंथन तभी सम्भव हो सका था जब नागराज वासुकी ने मथानी बनकर इस महाअभियान में अपना सहयोग दिया था। मान्यता है कि तभी से नागराज वासुकी न केवल सदा-सदा के लिए नीलकंठ महादेव के गले के हार के रूप में सुशोभित हो गए, वरन लोकजीवन में श्रद्धा से पूजे जाने लगे। हिंदू धर्मावलम्बियों की प्रगाढ़ मान्यता है कि धरती शेषनाग के फण पर टिकी हुई है। यही कारण है कि हिंदू धर्म में सर्पहत्या को महापाप माना गया है। हमारे धर्म शास्त्रों में श्रावण माह विशेष कर नागपंचमी के दिन धरती खोदना निषिद्ध माना गया है। सनातनधर्मी नागपंचमी के दिन नागों का दर्शन व पूजन शुभ फलदायी मानते हैं।

श्रावणी पूर्णिमा का पुरातन पर्व रक्षाबंधन

वैदिक साहित्य के उल्लेख बताते हैं कि प्राचीन काल में ऋषि- मुनि, आचार्य व पुरोहित श्रावणी पूर्णिमा की पावन तिथि को वैदिक मंत्रों से अभिमंत्रित रक्षा-सूत्र अपने शिष्यों-यजमानों को बांधते थे और शिष्य व अनुयायी अपने गुरुओं को चरणस्पर्श कर उनकी शिक्षाओं पर चलने का वचन देते थे। इस रक्षासूत्र बंधन का वैदिक मंत्र है- येन बद्धो बलिः राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल। हिंदी में इसका अर्थ हुआ- जिस रक्षा सूत्र से महान शक्तिशाली दानवेंद्र राजा बलि को बांधा गया था, उसी सूत्र से मैं तुझे बांधती हूं, तू अपने संकल्प से कभी भी विचलित नहीं होना। कालांतर में कन्याओं, ब्राह्मणों व स्त्री द्वारा रक्षासूत्र बंधन की परम्परा पड़ गई। इस पर्व का शुभारम्भ पौराणिक युग में हुआ था। कहा जाता है सर्वप्रथम देवी लक्ष्मी ने दानवराज बलि को रक्षासूत्र बांधा था। भगवान विष्णु के वामन अवतार से जुड़े उस कथा प्रसंग से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। इसके अलावा

देव-दानव युद्ध में देवों को विजय दिलाने के लिए इंद्राणी द्वारा देवराज इंद्र व देवों को अभिमंत्रित धागा बांधने, देवगुरु बृहस्पति का इंद्र को रक्षा सूत्र बांधना, द्रौपदी का कृष्ण की कलाई पर चीर बांधना पर्व की पौराणिकता को प्रमाणित करते हैं। कुछ पर्यावरण प्रेमी अग्रदूतों ने पेड़ों को रक्षासूत्र बांधने की भी परम्परा शुरू की थी। वृक्षों को रक्षा सूत्र बांधने के पीछे पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की रक्षा का दिव्य भाव निहित है। वर्तमान समय यह पर्व भाई-बहन के त्योहार के रूप में सर्वाधिक लोकप्रिय है। राखी के स्नेहिल धागों में बहनों की प्रेम व निश्छल भावनाएं होती हैं। अपने भाई की लम्बी आयु की कामना कर ढेरों आशीष अपने भाई को देती हैं। भाई भी अपनी बहन को संकट के समय सुरक्षा व संरक्षण का आश्वासन देता है।

●●●

50+
YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

पर्यावरण

सोनम लववंशी

सावन केवल एक ऋतु का बदलाव नहीं, बल्कि पर्यावरण के साथ मनुष्य के आत्मीय सम्बंधों को पुनर्जीवित करने का एक सांस्कृतिक और प्राकृतिक अनुष्ठान है।

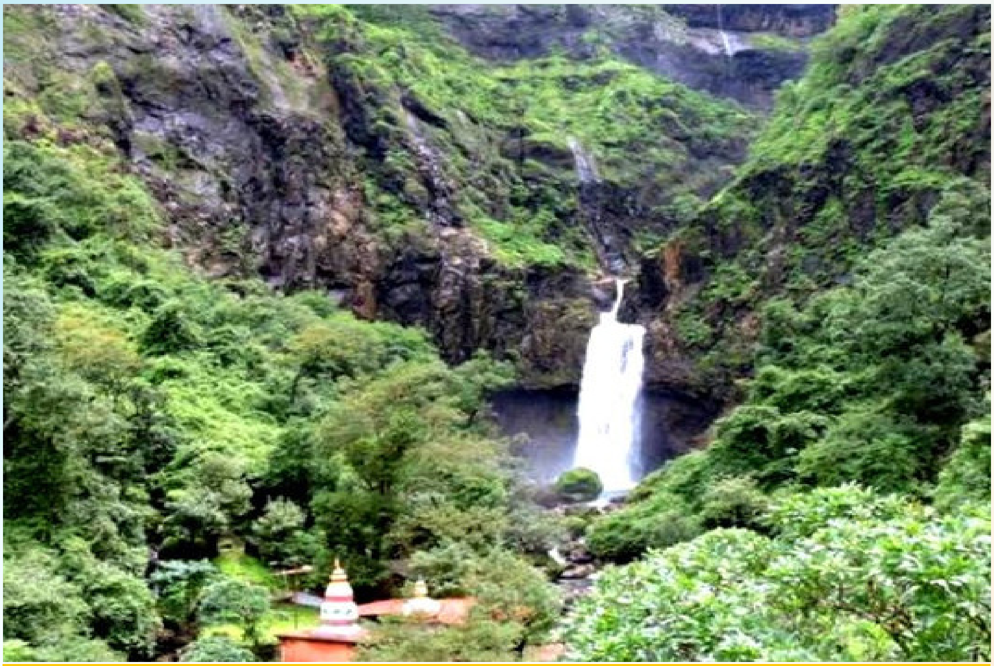

प्रकृति का मल्हार और सावन का आगमन

सावन केवल पंचांग का एक महीना नहीं, बल्कि चेतना का उत्सव है, धरती का श्रृंगार है और पर्यावरण के पुनर्जन्म का मांगलिक पर्व। जब माटी से सौंधी सुगंध उठती है, तो वह केवल नासिका को ही तृप्त नहीं करती, बल्कि आत्मा के भीतर तक सृष्टि के प्रति कृतज्ञता का भाव भर देती है। सावन और पर्यावरण का सम्बंध इतना गहरा और आत्मीय है कि एक के बिना दूसरे की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह मौसम प्रकृति के पुनर्जन्म की तरह है, जहां सब कुछ फिर से नया, स्वच्छ और जीवंत हो उठता है।

सावन के मौसम का मिजाज अनोखा और मनभावन होता है। कभी धूप-छांव का खेल चलता है, तो कभी अचानक आसमान काले घने बादलों की चादर ओढ़ लेता है। मेघों की गर्जना ऐसी लगती है मानों अंतरिक्ष में कोई अदृश्य नगाड़ा बज रहा हो और बिजली की कौंध उस संगीत की लय पर नाचती कोई नर्तकी हो। मौसम का यह रोमानियत भरा अंदाज केवल मन को ही प्रसन्न नहीं करता, बल्कि प्रकृति के हर एक घटक में नई ऊर्जा का संचार करता है। भीषण गर्मी से मुरझाई हुई वनस्पति इस वर्षा-जल से स्नान करके पुनः यौवन प्राप्त करती है। वायुमंडल में धूल और प्रदूषण का जो गुबार जमा होता है, सावन की धाराएं उसे धोकर हवा को एकदम पारदर्शी और शुद्ध बना देती हैं।

माटी की नमी और नवसृजन का पर्व

सावन की अविरल वर्षा से धरती की ऊपरी परत को जीवनदायिनी नमी मिलती है। गर्मी के कारण जो मिट्टी कठोर और बंजर सी प्रतीत होने लगती थी, वह जल पाकर कोमल और उपजाऊ हो जाती है। यह नमी नए जीवन के अंकुरण के लिए सबसे अनुकूल परिस्थिति बनाती है। हवा में उड़कर आए बीज, जो अब तक मिट्टी के भीतर सुप्त अवस्था में पड़े थे, जल का स्पर्श पाते ही जाग उठते हैं और नन्हें अंकुरों के रूप में बाहर झांकने लगते हैं।

इसी कारण भारतीय संस्कृति में सावन को वृक्षारोपण का सबसे श्रेष्ठ समय माना गया है। इस दौरान लगाए गए पौधे कम देखभाल में भी सरलता से जड़ पकड़ लेते हैं, क्योंकि मिट्टी में पहले से ही पर्याप्त आर्द्रता और पोषक तत्वों की गतिशीलता होती है। सावन का यह समय मानव जाति को यह सीख देता है कि हम प्रकृति से केवल लें ही नहीं, बल्कि उसे लौटाएं भी। इस मौसम में रोपा गया एक छोटा सा पौधा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्राणवायु और छाया का अक्षय स्रोत बनता है। यह नवसृजन का वह समय है जब वसुंधरा स्वयं अपने आंचल में नए जंगलों और वनों की पौध को पालती-पोसती है।

जलनिधियों का पुनर्जन्म और संरक्षण

सावन की वर्षा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हमारी जल-संचयन प्रणालियों को पुनः संजीवनी देना है। महीनों की प्यास के बाद नदियां, नदी-नाले, ताल-तलैया और कुएं जल से लबालब भर जाते हैं। सूखी पड़ी नदियों में जब नया पानी बहता है, तो वह केवल जल का प्रवाह नहीं होता, बल्कि जीवन धारा का पुनरागमन होता है। भूजल का स्तर, जो लगातार दोहन के कारण गहराई में चला जाता है, इस दौरान धीरे-धीरे पुनर्भरण पाता है।

वर्षा जल संचयन का प्राकृतिक पाठ सावन से बेहतर कोई नहीं सिखा सकता। यदि हम इस दौरान बरसने वाले जल को तालाबों, बावड़ियों और आधुनिक संचयन प्रणालियों के माध्यम से सहेज लें, तो वर्ष भर जल संकट का सामना नहीं करना पड़ेगा।

सावन में जहां भी दृष्टि जाती है, वहां तक केवल हरियाली का ही साम्राज्य दिखाई देता है। पहाड़ियों ने मानो हरी मखमली चादर ओढ़ ली हो और खेत-खलिहान नए धानी परिधान में सजे दिखाई देते हैं। यह फैली हुई हरितिमा केवल आंखों को ही सुख नहीं देती, बल्कि पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन को भी दृढ़ बनाती है। घने हरे पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर भारी मात्रा में ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे समूचा पर्यावरण शुद्ध और प्राणवान हो जाता है।

आधुनिक जीवन की आपाधापी, तनाव और कंक्रीट के जंगलों की नीरसता से थके मन को जब सावन की हरी-भरी प्रकृति और शीतल हवा का स्पर्श मिलता है, तो मन का सारा संताप मिट जाता है। हरियाली को देखना और बारिश की बूंदों की लयबद्ध ध्वनि को सुनना मस्तिष्क में शांति और प्रसन्नता के रसायनों को स्रावित करता है। सावन हमें सिखाता है कि पर्यावरण का संतुलन ही हमारी सांसों का आधार है। जब तक नदियां जल से भरी रहेंगी, जब तक मिट्टी में नमी रहेगी और जब तक पेड़-पौधे लहलहाते रहेंगे, तब तक मानव सभ्यता का अस्तित्व सुरक्षित रहेगा।आज जब वैश्विक तापमान और जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का चक्र अनिश्चित हो रहा है, तब सावन का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। हमें सावन के इस उपहार को केवल एक सुखद मौसम मानकर उपभोग नहीं करना चाहिए, बल्कि इसके पर्यावरणीय महत्व को समझते हुए प्रकृति के संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए। अधिक से अधिक वृक्ष लगाना, जल स्रोतों को प्रदूषण मुक्त रखना और जल का संचयन करना ही सावन के प्रति हमारी सच्ची कृतज्ञता होगी। जब हम प्रकृति का सम्मान करेंगे, तभी सावन की यह रिमझिम फुहारें, यह सोंधी महक और यह हरियाली युगों-युगों तक हमारी धरती को हरा-भरा और जीवन से परिपूर्ण बनाए रखेगी।

●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

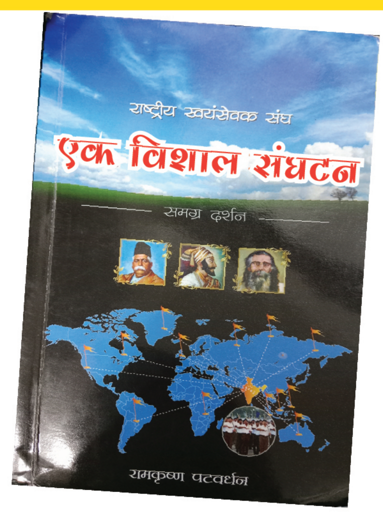

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK**

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

हपिडा स्काईनेक्स

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

हपिडा स्काईनेक्स प्रोटोटाइप के आने के बाद शायद आसमान केवल पक्षियों और विमानों का ही नहीं, बल्कि आम लोगों के व्यक्तिगत वाहनों का भी मार्ग बन जाएगा।

हवाई परिवहन का बदलता भविष्य

उत्तराखंड के एक दूरस्थ पहाड़ी गांव का युवा अपनी लगन, नवाचार और स्वदेशी तकनीक के बल पर ऐसा व्यक्तिगत उड़ान वाहन विकसित कर रहा है, जो लोगों को सड़कों की सीमाओं से मुक्त कर सीधे आसमान के रास्ते उनके गंतव्य तक पहुंचा सके, तो यह किसी विज्ञान-फंतासी कथा का कथानक प्रतीत हो सकता है, लेकिन अब यह कल्पना वास्तविकता की ओर कदम बढ़ा चुकी है। उत्तराखंड के अल्मोड़ा निवासी युवा नवप्रवर्तक रवि टम्टा और उनकी कम्पनी हपिडा स्काई प्राइवेट लिमिटेड ने अपने अत्याधुनिक व्यक्तिगत उड़ान वाहन 'हपिडा स्काईनेक्स' के प्रोटोटाइप का 7 अगस्त 2026 को सफल उड़ान परीक्षण करके देशभर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। सोशल मीडिया पर इन दिनों उनका वीडियो खूब देखा जा रहा है। रवि ने स्वयं चालक के रुप में प्रोटोटाइप में बैठकर परीक्षण के दौरान धरती से सफलतापूर्वक ऊपर उठाकर उसे चलाया और लगभग एक मिनट तक हवा में उड़ान भरी। यद्यपि यह अभी प्रारम्भिक चरण का प्रोटोटाइप है, फिर भी इस उपलब्धि ने यह संकेत दे दिया है कि भारत में व्यक्तिगत हवाई परिवहन का सपना अब सम्भवतः अधिक दूर नहीं रह गया है।

सबसे पहले जानते हैं कि हपिडा स्काईनेक्स है क्या? यह एक इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग वाहन है। इसका अर्थ है कि विद्युत ऊर्जा से संचालित ऐसा विमान जो हेलीकॉप्टर की तरह सीधे जमीन से ऊपर उठ सकता है और बिना किसी रनवे के वापस नीचे उतर सकता है। हपिडा स्काईनेक्स प्रोटोटाइप एक सिंगल-सीटर मॉडल है, जिसे एक व्यक्ति के उपयोग के लिए विकसित किया गया है। इसकी सबसे

बड़ी विशेषता यह है कि यह पूरी तरह विद्युत ऊर्जा से संचालित है, इसलिए पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारम्परिक हेलीकॉप्टरों और ईंधन-आधारित वाहनों के विपरीत हपिडा स्काईनेक्स में पेट्रोल, डीजल या विमान ईंधन का उपयोग नहीं होता, जिसके कारण इसके संचालन के दौरान प्रत्यक्ष रूप से कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य प्रदूषक गैसों का उत्सर्जन नहीं होता।

वर्तमान में दुनिया भर में विकसित की जा रही एयर टैक्सी और व्यक्तिगत उड़ान वाहन प्रणालियों का आधार इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग तकनीक है। हपिडा स्काईनेक्स में भी इसी तकनीक का उपयोग किया गया है। यह तकनीक हेलीकॉप्टर, उन्नत मल्टी-रोटर ड्रोन प्रणाली और इलेक्ट्रिक विमान की विशेषताओं का एक आधुनिक संयोजन कही जा सकती है। अब सरल भाषा में समझें कि यह तकनीक कैसे काम करती है? सामान्य हवाई जहाजों को उड़ान भरने के लिए लम्बे रनवे की आवश्यकता होती है, क्योंकि उन्हें गति प्राप्त करके पंखों अर्थात् विंगों की सहायता से उर्ध्व बल उत्पन्न करना पड़ता है। इसके विपरीत इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग वाहनों में कई छोटे-छोटे विद्युत चालित रोटर या प्रोपेलर लगे होते हैं, जो हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठाने वाला बल उत्पन्न करते हैं। उड़ान की प्रक्रिया को तीन चरणों में समझा जा सकता है। सबसे पहले चरण में वर्टिकल टेक-ऑफ वाहन के सभी रोटर एक साथ घूमते हैं और वाहन को सीधे जमीन से ऊपर उठा देते हैं। आगे की उड़ान के लिए एक निश्चित ऊंचाई पर पहुंचने के बाद वाहन आगे बढ़ने लगता है। जैसा कि रवि टम्टा के वीडियो में स्पष्ट देखा जा सकता है। हांलाकि कुछ इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग डिजाइनों में रोटर झुक जाते हैं, जबकि कुछ में अलग प्रणोदन प्रणाली कार्य करती है। इससे ऊर्जा की बचत होती है और वाहन अधिक दूरी तय कर सकता है। अंतिम चरण में वर्टिकल लैंडिंग के दौरान गंतव्य पर पहुंचकर वाहन पुनः हेलीकॉप्टर की तरह धीरे-धीरे नीचे उतरता है और बहुत कम जगह में लैंड कर सकता है।

हपिडा स्काईनेक्स में ड्रोन प्रोपेलरों द्वारा हवा में संतुलन बनाए रखने के सिद्धांत को विकसित करके इसमें मानव भार वहन करने की क्षमता भी जोड़ी गई है। हपिडा स्काईनेक्स में 8 शक्तिशाली प्रोपेलर लगाए गए हैं, जो उड़ान के दौरान इसे स्थिरता और नियंत्रण प्रदान करते हैं। यदि इनमें से कोई एक प्रोपेलर उड़ान के दौरान काम करना बंद कर दे, तब भी वाहन सुरक्षित रूप से नीचे उतर सकता है। इसके अतिरिक्त इसमें बैलिस्टिक पैराशूट प्रणाली भी है, जो किसी गम्भीर तकनीकी खराबी की स्थिति में वाहन को नियंत्रित ढंग से जमीन पर लाने में सहायता करती है। इसमें स्वचालित उड़ान यानी ऑटोपायलट और मैनुअल नियंत्रण दोनों विकल्प हैं, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर चालक वाहन का सीधा नियंत्रण अपने हाथ में ले सके।

हपिडा स्काईनेक्स को हमें केवल एक स्थानीय नवाचार के रूप में नहीं देखना चाहिए। दुनिया में चीन की ईहेंग, अमेरिका की जोबी एविएशन और आर्चर एविएशन जैसी कंपनियाँ एयर टैक्सी और व्यक्तिगत हवाई परिवहन विकसित करने में अग्रणी हैं, जबकि दुबई और अबू धाबी इसके लिए विशेष वर्टीपोर्ट तैयार कर रहे हैं। ऐसे वैश्विक प्रयासों के मध्य हपिडा स्काईनेक्स के सफल परीक्षण ने इस क्षेत्र में भारत को भी सशक्त दावेदार बना दिया है।

यद्यपि इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग एक भावी

क्रांतिकारी परिवहन अवधारणा है, लेकिन इसके व्यापक उपयोग से पहले अधिक शक्तिशाली, हल्की और सुरक्षित बैटरियों की आवश्यकता से लेकर हपिडा स्काईनेक्स जैसे हवाई विमान की सुरक्षा और विश्वसनीयता, इसके डिज़ाइन अनुमोदन, एयरवर्थनेस प्रमाणन, पायलट लाइसेंस, एयरस्पेस प्रबंधन और परिचालन अनुमति जैसी अनेक विनियामक स्वीकृतियां, विशेष टेक-ऑफ और लैंडिंग केंद्रों, चार्जिंग स्टेशनों तथा डिजिटल यातायात प्रबंधन प्रणालियों का निर्माण जैसी कई तकनीकी और नियामकीय चुनौतियों के समाधान आवश्यक होंगे। उच्च लागत के कारण शुरुआती वर्षों में इसकी कीमत आम लोगों की पहुंच से बाहर रह सकती है। इसके अलावा, तेज हवा, घना कोहरा, भारी वर्षा और पर्वतीय क्षेत्रों की बदलती मौसम स्थितियां इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग संचालन को प्रभावित कर सकती हैं। विशेष रूप से उत्तराखंड जैसे क्षेत्रों में मौसम संबंधी चुनौतियों का समाधान तकनीक की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

प्रतिबंध

पनीर की थाली पर सरकार की टेढ़ी दृष्टि

पनीर के नाम पर एनालॉग पनीर बेचने वाले बिक्रेताओं पर सरकार ने पूरी तरह शिकंजा कसा है। महाराष्ट्र, गुजरात व छत्तीसगढ़ में नकली पनीर बेचना पूरी प्रतिबंधित कर दिया गया है और कठोर कार्रवाई की भी चेतावनी सरकार ने दे डाली है।

पनीर भारतीय खान-पान का केवल एक खाद्य पदार्थ नहीं, बल्कि करोड़ों शाकाहारी परिवारों के लिए प्रोटीन का महत्वपूर्ण स्रोत है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक और घरों से लेकर होटल, रेस्टोरेंट, कैटरिंग तथा विवाह समारोहों तक पनीर की मांग लगातार बनी रहती है। इसी भारी मांग के बीच पिछले कुछ समय से बाजार में ऐसा उत्पाद तेजी से सामने आया, जो दिखने में पनीर जैसा है, लेकिन पारम्परिक अर्थ में दूध से बना पनीर नहीं है। इसे आमतौर पर एनालॉग पनीर कहा जा रहा है। जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहद हानिकारक है। इसके सेवन से कई घातक बीमारियां होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

महाराष्ट्र, गुजरात और छत्तीसगढ़ में एनालॉग पनीर एवं अन्य डेयरी एनालॉग उत्पादों के निर्माण, बिक्री, वितरण, परिवहन तथा भंडारण पर एक वर्ष का राज्यव्यापी प्रतिबंध लगाया गया है। यह प्रतिबंध सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं खाद्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जारी किया गया है। महाराष्ट्र में 30 जुलाई 2026 के आदेश के अनुसार, खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 की धारा 30(2)(ए), 18 और 29 के तहत यह निर्णय लिया गया है।

गुजरात ने जुलाई 2026 में एनालॉग पनीर के साथ एनालॉग चीज व बटर के उत्पादन, भंडारण, परिवहन, वितरण और बिक्री पर राज्यव्यापी रोक की घोषणा की। महाराष्ट्र में भी एफडीए द्वारा एनालॉग पनीर के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करते हुए उत्पादन, बिक्री, भंडारण, परिवहन और वितरण पर प्रतिबंध का समाचार प्रकाश में आया है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ सरकार ने 31 जुलाई 2026 से राज्य में एनालॉग पनीर (नकली पनीर) के निर्माण, भंडारण, परिवहन, वितरण और बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है और तो और 12 अगस्त से तो मध्य प्रदेश सरकार ने भी एनेलोग पनीर पर बैन लगा दिया है।

डॉ. ईलेवान ठाकर

तीनों राज्यों में प्रतिबंध का उल्लंघन करने वाले निर्माता, विक्रेता, वितरक, परिवहनकर्ता या खाद्य प्रतिष्ठान पर कार्रवाई के लिए एफएसएस एक्ट की धारा 50, 51, 52, 55, 57 और 59 लागू होती है। उल्लंघन की प्रकृति के अनुसार दंड 2 लाख से 10 लाख तक तथा गम्भीर मामलों में 6 महीने से लेकर आजीवन कारावास तक हो सकता है।

महाराष्ट्र के आदेश में स्पष्ट है कि ग्राहक की मांग या मानक के अनुरूप भोजन न देने पर धारा 50 के तहत 5 लाख तक, सब-स्टैंडर्ड फूड पर धारा 51 के तहत 5 लाख तक, मिसब्रांडेड फूड पर धारा 52 के तहत 3 लाख तक और फूड सेफ्टी ऑफिसर के आदेश का पालन न करने पर धारा 55 के तहत 2 लाख तक जुर्माना लगाया जा सकता है। यदि खाद्य पदार्थ असुरक्षित पाया जाता है, तो धारा 59 के तहत जेल एवं जुर्माना की अवधि/राशि चोट की गम्भीरता के अनुसार बढ़ सकती है।

गुजरात में अप्रैल एवं अगस्त 2026 में एनालॉग पनीर, चीज और बटर के खिलाफ प्रतिबंध लागू किया गया। यहां होटल, रेस्टोरेंट को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि वे ग्राहक को बताएँ कि पनीर मिल्क पनीर है या एनालॉग पनीर। बिना जानकारी दिए एनालॉग पनीर को दूध के पनीर के रूप में परोसना भ्रामक माना गया है।

छत्तीसगढ़ में भी एनालॉग डेयरी उत्पादों के निर्माण, प्रोसेसिंग, स्टोरेज, ट्रांसपोर्टेशन, वितरण और बिक्री पर एक वर्ष का प्रतिबंध है। यहां पूरे सप्लाई चेन पर कार्रवाई की जा सकती है।

महत्वपूर्ण है कि यदि कोई दुकानदार या रेस्टोरेंट एनालॉग पनीर को प्योर पनीर, मिल्क पनीर या सामान्य पनीर बताकर बेचेगा, तो यह केवल गुणवत्ता उल्लंघन नहीं बल्कि उपभोक्ता को धोखा देने का मामला बनेगा। एफएसएस एक्ट की धारा 24 के तहत ऐसे भ्रामक विज्ञापन और गलत प्रतिनिधित्व पर भी कार्रवाई सम्भव है।

विशेषज्ञों के अनुसार, राज्य के फूड सेफ्टी विभाग निरीक्षण, सैंपलिंग, टेस्टिंग, सीज़र, बिक्री/उत्पादन रोकना, नोटिस, जुर्माना और गंभीर मामलों में अभियोजन की प्रक्रिया अपनाते हैं। एफएसएसएआई ने स्पष्ट किया है कि प्रवर्तन राज्य के फूड सेफ्टी कमिश्नर, डेजिग्नेटेड ऑफिसर और फूड सेफ्टी ऑफिसर के माध्यम से होता है।

इस प्रकार, एनालॉग पनीर पर प्रतिबंध का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई केवल 1 लाख के जुर्माने तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रकृति के अनुसार कड़ी सजा का प्रावधान है, लेकिन सवाल केवल प्रतिबंध लगाने का नहीं है। सवाल यह है कि क्या प्रतिबंध के बाद आम आदमी की थाली तक पहुंचने वाला नकली पनीर वास्तव में बंद होगा? पहले जान लेते है एनालॉग पनीर आखिर क्या है। साधारण भाषा में समझें तो असली पनीर दूध से बनाया जाता है। इसके विपरीत एनालॉग प्रोडक्ट में दूध की जगह या दूध के साथ गैर-दुग्ध वसा, वनस्पति तेल, स्टार्च, प्रोटीन अथवा अन्य अनुमत/अनुमति-आधारित सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। इन उत्पादों की बनावट, रंग और आकार इस प्रकार तैयार किया जा सकता है कि वे देखने में पारम्परिक पनीर जैसे लगें। महाराष्ट्र, गुजरात और छत्तीसगढ में प्रतिबंध इसलिए महत्वपूर्ण है कि कार्रवाई केवल दुकान पर बिक्री रोकने तक सीमित नहीं रखी गई है बल्कि उत्पादन से लेकर भंडारण, परिवहन, वितरण और बिक्री तक पूरी सप्लाई चेन पर भी प्रतिबंध लगाया गया है। ●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

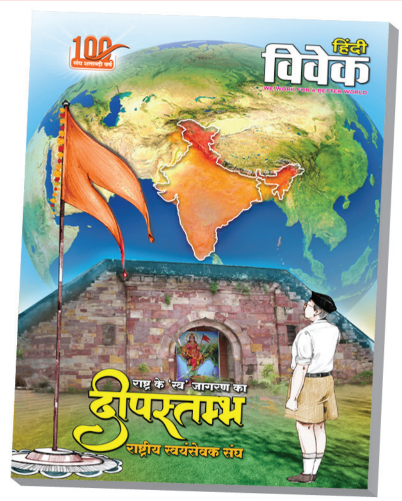

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

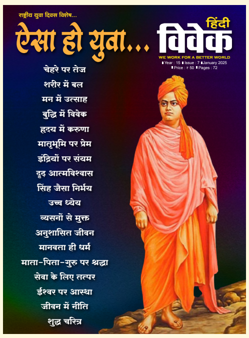

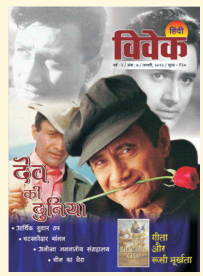

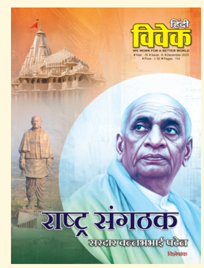

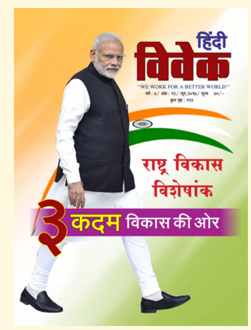

हिंदी विवेक

" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

रचना प्रियदर्शनी

वरिष्ठ नागरिकों की सुविधाओं के लिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं, जिससे उन्हें न आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़े और न ही चिकित्कीय व्यवस्था के लिए कहीं भटकना पड़े।

योजनाओं के साएं में सुरक्षित बुढ़ापा

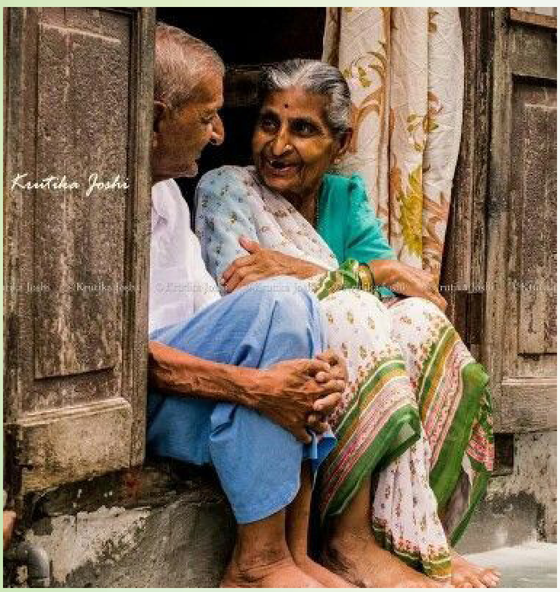

भारत में पिछले कुछ वर्षों में जीवन प्रत्याशा में हुई वृद्धि के फलस्वरूप बुजुर्गों की संख्या में भी तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। यूएनएफपीए की 'इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023' के अनुसार देश में बुजुर्गों की स्थिति पर एक विस्तृत प्रतिवेदन तैयार किया गया है। इस प्रतिवेदन के अनुसार, इस समय भारत में 10.5 करोड़ बुजुर्ग व्यक्ति हैं और वर्ष 2050 तक इनकी संख्या 32.4 करोड़ तक पहुंच जाने की सम्भावना है। भारत में बुजुर्गों की कुल संख्या का 70 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। भारत में तेजी से बढ़ती बुजुर्ग जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए 13 महत्वपूर्ण योजनाएं लागू की हैं। इन योजनाओं में राष्ट्रीय वयोश्री योजना, प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत जन आरोग्य योजना, प्रधानमंत्री वय वंदन योजना, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना आदि शामिल हैं।

राष्ट्रीय वयोश्री योजना

केंद्र सरकार की इस योजना का संचालन सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा किया जाता है। इसमें 15,000 रुपये से कम मासिक आय वाले बीपीएल परिवार के उन 60 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को, जिनकी मासिक आय 15,000 रुपए से कम है और जो आयु सम्बंधी विकलांगता से पीड़ित हैं।

प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत जन आरोग्य योजना

इस योजना का संचालन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत किया जा रहा है। इसमें लाभार्थियों को प्रति परिवार 5 लाख रुपए तक के कैशलैस इलाज की सुविधा दी जाती है। इसके अलावा 70 साल से अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए 5 लाख रुपए का अतिरिक्त कवरेज दिया जाता है।

प्रधानमंत्री वय वंदन योजना

केंद्र सरकार एवं जीवन बीमा निगम के द्वारा संयुक्त रूप से संचालित इस योजना में 60 साल या उससे ज्यादा आयु के बुजुर्ग निवेश करके पेंशन प्राप्त कर सकते हैं। निवेश के आधार पर तय सीमा के बाद 1000 से लेकर 10000 तक की पेंशन प्राप्त की जा सकती है। बुजुर्ग इस योजना के माध्यम से जमा राशि के 75% तक लोन भी ले सकते हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना

इस योजना के माध्यम से गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले 60 से 79 साल तक आयु वर्ग के बुजुर्गों को केंद्र सरकार की तरफ से हर महीने 200 रुपए और 80 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों को 500 रुपए वित्तीय सहायता दी जाती है।

अटल पेंशन योजना

भारत सरकार द्वारा संचालित अटल पेंशन योजना देश के असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों और आम नागरिकों को बुढ़ापे में वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू की गई है। इसका नियमन पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी द्वारा किया जाता है।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए एकीकृत कार्यक्रम

इस योजना के तहत बुजुर्गों के लिए वृद्धाश्रम, मोबाइल मेडिकेयर यूनिट, डे केयर और सतत देखभाल केंद्र स्थापित किए जाते हैं। इस समय देश में लगभग 696 वृद्धाश्रम संचालित किए जा रहे हैं।

सहायता हेल्पलाइन नम्बर 14567

सरकार द्वारा देशभर के वरिष्ठ नागरिकों की सहायता के लिए यह हेल्पलाइन संचालित की जा रही है। इसका उद्देश्य बुजुर्गों के सामने आने वाली चुनौतियों और समस्याओं में सहायता देना है। इसके जरिए उन्हें कानूनी परामर्श,

सीनियर केयर एजिंग ग्रोथ इंजन

यह प्लेटफॉर्म स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करता है, जो बुजुर्गों के लिए नई सेवाएं डेवलप करते हैं। सरकार प्रति परियोजना 1 करोड़ रुपए तक की सहायता देती है

एसएसीआरईडी पोर्टल

60 वर्ष से अधिक आयु के नागरिक इस पोर्टल पर पंजीकरण करने के बाद घर से काम कर सकते हैं। इसके अलावा, उन्हें परामर्श और कौशल आधारित नौकरियां भी दी जा सकती हैं।

राष्ट्रीय वृद्धजन स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम

यह कार्यक्रम देश के सभी 713 जिलों में चलाया जा रहा है। इसके माध्यम से बुजुर्गों को जेरियाट्रिक वार्ड, फिजियोथेरेपी, ओपीडी सेवाएं और 10-बिस्तर वाले वृद्ध वार्ड की सुविधा मुहैया कराई जा रही है। यह कार्यक्रम बुजुर्गों को व्यापक और सस्ते उपचार की सुविधा देता है।

वरिष्ठ नागरिक कल्याण कोष

यह कोष उन योजनाओं को समर्थन देता है, जो बुजुर्गों की सामाजिक सुरक्षा, आवास और स्वास्थ्य सेवाएं सुदृढ़ करती हैं। यह बिना दावे वाली पीएफ, एलआईसी, बचत खातों जैसी राशि से संचालित होता है।

सामाजिक और सामुदायिक सहायता कार्यक्रम

इन कार्यक्रमों के तहत बुजुर्गों के लिए डे-केयर सेंटर, सामुदायिक गतिविधियां और परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं, ताकि वे समाज से जुड़े रहें और अकेलापन कम हो।

गीत गाते पत्थर

मध्य प्रदेश में एक ऐसा पहाड़ है जहां उनके पत्थर भी गीत गाते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण व लोकोक्ति क्या हैं, डालते हैं इसपर एक दृष्टि।

आपने कई तरह के किस्से सुने होंगे, आपको कई बातों पर विश्वास भी हुआ होगा और आश्चर्य भी। क्या आपने ऐसा किसी पहाड़ के बारे में सुना है कि जिसके पत्थर टकराते ही संगीत की आवाज सुनाई देती है? शायद यह बात सुनकर आपको अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा होगा। यह मजाक नहीं बल्कि सच्चाई है, तो चलिए आपको इस पहाड़ के बारे में आपको बताते हैं।

मध्य प्रदेश के देवास जिले की बागली (उदयनगर) तहसील में पोटला और पिपारी गांवों के पास एक ऐसा स्थान छिपा है, जो प्रकृति और विज्ञान की अनोखी जुगलबंदी का जीवंत प्रमाण है। यहां सात पहाड़ियों पर फैले कावड़िया पहाड़ को देखकर लगता है मानो धरती ने खुद को एक विशाल संगीत वाद्ययंत्र में बदल लिया हो। यहां पर करोड़ों साल पुराने खंभेनुमा, षटकोणीय और पंचकोणीय बेसाल्ट पत्थर पाए जाते हैं, जिन पर चोट करने पर धातु जैसी संगीतमय गूंज सुनाई देती है। दूर से देखने पर ये मानव-निर्मित स्तम्भों की तरह लगते हैं, लेकिन ये करोड़ों साल पुरानी ज्वालामुखी की देन हैं।

इन पत्थरों की सबसे अद्भुत विशेषता उनकी संगीतमय आवाज है। किसी अन्य पत्थर से हल्की-सी चोट करने पर इनमें से धातु जैसी गूंज या सुर निकलते हैं। मानो ये पत्थर अपने अंदर छिपी कोई प्राचीन धुन सुना रहे हों। यह अनुभव इतना विस्मयकारी होता है कि पर्यटक और स्थानीय लोग दोनों ही ठिठक जाते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से ऐसा माना जाता है कि इनका निर्माण लाखों वर्ष पूर्व तीव्र ज्वालामुखी गतिविधियों के दौरान गर्म लावा के धीरे-धीरे ठंडे होकर बेसाल्ट कॉलम में बदलने से हुआ था।

स्थानीय लोककथाएं इन्हें महाभारत काल से जोड़ती हैं। लोग मानते हैं कि ये स्तम्भ पांडवों या भीम द्वारा बनाए गए थे। भले ही इसका कोई वैज्ञानिक आधार न हो, लेकिन ये कथाएं जगह को रहस्यमयी और आकर्षक बनाती हैं।

बताया जाता है कि इन पत्थरों की बनावट बहुत ठोस और सघन होती है। कुछ पत्थरों के भीतर मौजूद प्राकृतिक संरचना उन्हें घंटी की तरह कम्पन करने योग्य बना देती है। जब ऐसे पत्थर पर हल्की चोट पड़ती है, तो वह कम्पन कुछ क्षण तक उसके भीतर घूमता रहता है और उसी से धातु जैसी साफ गूंज सुनाई देती है। पहाड़ पर बिखरे हजारों-लाखों पत्थरों में से प्रत्येक पत्थर से आवाज नहीं निकलती। केवल कुछ विशेष आकार और बनावट वाले पत्थर ही धातु जैसी गूंज पैदा करते हैं। प्रकृति, विज्ञान और लोकविश्वास का अनूठा संगम होने के बावजूद यह स्थल अब भी अपेक्षित पहचान और सुविधाओं से वंचित है। यहां पहुंचने का रास्ता कठिन है और दिशा-सूचक बोर्ड, पर्यटक सुविधाएं तथा संरक्षण की व्यवस्था भी सीमित है। ●●●

15 सालों में खिलता है ये फूल

हिमालय के पहाड़ों में पाया जाने वाला एक ऐसा फूल है जो प्रतिदिन ही नहीं बल्कि 15 सालों में केवल एक बार ही खिलता है। इसे केन्जो कहा जाता है और स्थानीय भाषा में लोग पदमचाल भी कहते हैं। यह हिमालय के ठंडे बर्फीले पहाड़ों पर समुद्र तल से करीब 4000 मीटर की ऊंचाई पर पाया गया है। इसकी ऊंचाई 3.2 फीट से 6.5 फीट तक होने का अनुमान है। वहीं, इसका एक फूल खिलने में करीब 7-15 साल तक लग सकते हैं। फिर जैसे ही फूल खिल जाता है तो धीरे-धीरे इसका जीवन चक्र खत्म हो सकता है। हिमालय के पहाड़ों में रहने वाले लोग सदियों से इस फूल को एक औषधि की तरह मानते रहे हैं, क्योंकि यह कई शारीरिक समस्याओं को दूर करने में सहायक है।

यहां इंसानों के दोस्त हैं सांप

महाराष्ट्र के सोलापुर जिले का शेतफल गांव इसकी मिसाल है। यहां जहरीले कोबरा इंसानों के दुश्मन नहीं, बल्कि रक्षक माने जाते हैं। लोग इन्हें भगवान सिद्धेश्वर का रूप मानकर पूजा करते हैं। हर घर में सांपों के आराम के लिए 'देवस्थान' जगह छोड़ी जाती है। सांपों को मारना या चोट पहुंचाना यहां वर्जित है। लम्बे समय से इंसानों के बीच रहने से ये सांप शांत हो गए हैं। इसे जीव विज्ञान में अनुकूलन कहते हैं। इस कारण गांव में कभी कोई अप्रिय घटना नहीं होती।यह प्रकृति और इंसान के बीच गहरे विश्वास का जीवंत प्रमाण है।

बलोद जिला बना वॉटर हब

छत्तीसगढ़ के बलोद जिले में बारिश के पानी को बहने नहीं दिया जाता, बल्कि उसे जमीन के अंदर सहेजा जाता है।

प्रधानमंत्री की 'कैच द रेन' अपील पर यहां एक बड़ा जन आंदोलन शुरू हुआ। सिर्फ एक साल के भीतर ग्रामीणों और प्रशासन ने मिलकर 2, 84, 000 से ज्यादा जल संरक्षण संरचनाएं बनीं। सूखे पड़े नाले और बंद बोरवेल अब पानी से लबालब हैं। अकेले तवेरा नाले के पुनर्जीवन से करीब साढ़े 6 करोड़ लीटर पानी बचेगा, जिससे भूजल का स्तर 10 फीट तक ऊपर आ सकता है। बलोद का यह मॉडल राष्ट्रीय सम्मान पा चुका है। इससे यह साबित होता है कि अगर हम जागरूक हों तो बारिश की हर बूंद से अपने खेतों की हरियाली और आने वाले कल को सुरक्षित कर सकते हैं।

दिव्यांग कल्याणकारी संस्थान द्वारा मेधावी विद्यार्थियों व शिक्षकों को किया गया सम्मानित

दिव्यांग कल्याणकारी संस्थान में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर शनिवार विगत 8 अगस्त 2026 को कक्षा दसवीं व बारहवीं के मेधावी विद्यार्थियों का गुणगौरव करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कक्षा दसवीं-बारहवीं के दिव्यांग मेधावी विद्यार्थी तथा साथ ही परिसर की सामान्य स्कूलों के कक्षा दसवीं-बारहवीं के मेधावी विद्यार्थियों का सत्कार भी किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में निलेश धायरकर तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में प्रसिद्ध चित्रकार रविंद्र देव, जो महर्षि कर्वे शिक्षा कार्य के अध्यक्ष हैं, उनकी उपस्थिति में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत दिव्यांग कल्याणकारी संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा 'कुंभार जैसा गुरु नहीं रे जगत में' इस स्वागत गीत से हुई। संगठन मंत्र के बाद कार्यक्रम का प्रास्ताविक संस्थान के कार्याध्यक्ष एडवोकेट मुरलीधर कचरे ने किया। इन्होंने अपने प्रास्ताविक भाषण में दिव्यांग कल्याणकारी संस्थान द्वारा दिव्यांग बच्चों के पुनर्वास के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा सभी मेधावी विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों व शिक्षकों से यह विनती की कि आप इस संस्थान में इन दिव्यांग बच्चों का कौतुक करने तथा उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए समय-समय पर संस्थान में आते रहें, संस्थान की जानकारी प्राप्त करें और यदि आपके देखने में कोई गरीब दिव्यांग बच्चा आए तो उसे इस संस्थान में प्रवेश दिलाने का कार्य करें। इसके बाद कार्यक्रम के मुख्य वक्ता निलेश धायरकर तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि-अध्यक्ष रविंद्र देव का परिचय करवाया गया। संस्थान की ओर से संस्थान के कार्याध्यक्ष एडवोकेट मुरलीधर कचरे तथा सलाहकार मंडल के सदस्य दिनेश होले के हाथों कार्यक्रम के अध्यक्ष व मुख्य वक्ता का स्वागत किया गया। मुख्य वक्ता निलेश धायरकर ने अपने भाषण में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. अब्दुल कलाम के जीवन पर आधारित कुछ प्रसंग व जानकारी सभी विद्यार्थियों को दी।

संघ जगणारा माणूस पुस्तक का विमोचन सम्पन्न

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक, सामजिक समरसता के प्रणेता एवं अग्रदूत तथा हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था के अध्यक्ष पद्मश्री रमेश पतंगे जी पर आधारित 'संघ जगणारा माणूस' नामक मराठी पुस्तक का विमोचन हाल ही में बीते दिनों गणमान्य जनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। मुंबई के वडाला स्थित साप्ताहिक विवेक कार्यालय में उक्त पुस्तक का विमोचन किया गया।

विशेष तौर पर संघ के पश्चिम क्षेत्र प्रचार प्रमुख प्रमोद बापट के हाथों पुस्तक का विमोचन किया गया। इस दौरान विवेक समूह के प्रबंध सम्पादक दिलीप करंबेळकर, कोकण प्रांत प्रचार प्रमुख लक्ष्मीकांत नकाशे, दैनिक मुंबई तरुण भारत समाचार पत्र के संपादक किरण शेलार और साप्ताहिक विवेक के सभी पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। पद्मश्री रमेश पतंगे जी के 81वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में साप्ताहिक विवेक पुस्तक विभाग के सम्पादक रवींद्र गोळे द्वारा लिखित इस पुस्तक की खूब सराहना हो रही है। रवींद्र गोळे ने अपनी मनोभावना व्यक्त करते हुए कहा कि पद्मश्री रमेश पतंगे जी के सहवास एवं मार्गदर्शन में कार्य करने के दौरान बीते 25 वर्षों से मुझमें भी सहज सकारात्मक बदलाव हुए हैं और मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है। गुरु ऋण से मुक्त होने का एक छोटा सा प्रयास इस पुस्तक के माध्यम से मैंने किया है।

टीजेएसबी सहकारी बैंक लिमिटेड.
मल्टी-स्टेट शेड्यूल्ड बैंक
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
सपनों की कार से
कार की चाबी तक
अपने सपनों की कार घर लाएँ
टीजेएसबी ऑटो फाइनेंस
लोन के साथ।
ब्याज दर
7.80%*
प्रतिवर्ष से शुरू
*अटी व नियम लागू
www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897203